International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण से प्रभावित साहित्य और संस्कृति।

डॉ. सूरज बालासो चौगुले

वारणा महाविद्यालय ऐतवडे खुर्द, तहसिल-वाळवा जिला- सांगली

Corresponding Author - डॉ. सूरज बालासो चौगुले

DOI - 10.5281/zenodo.12718406

शोध निबंध का सार :

समाज के हर दौर में साहित्यकार ने अपनी भूमिका बड़ी जिम्मेदारी से निभाई है। अज्ञान अंधकार में भी ज्ञान का प्रकाश देने के लिए साहित्यकार अपने साहित्य द्वारा ज्ञान ज्योति जलता है। आज के दौर में ज्ञानी लेकिन ज्ञान हासिल करने के बाद समाज से अपने आप को अलग करने वाले उसे समाज की भी समीक्षा आज का साहित्यिक करता है। आज का यह दौर भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण से प्रभावित है। ऐसी स्थिति में समाज में निर्माण होने वाली अनेक सामाजिक समस्याओं को आज का साहित्यकार करीब से देख रहा है,उसे अपने साहित्य द्वारा परिभाषित करने का प्रयास कर रहा है। भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता, पारिवारिक परिवेश इन सभी बातों को बनाए रखने के लिए हर संवेदनशील व्यक्ति प्रयास करता है। साहित्यकार तो संवेदनशील होता ही है, जब ऐसी अनेक समस्याएं वह करीब से देखता है, तो वह इन समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बना लेता है। साहित्यकार तत्कालीन समाज के दस्तावेज को अपने साहित्य में अधोरेखित करता है। जो आगे चलकर उस समाज का इतिहास बन जाता है। भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के इस दौर में साहित्यकार ने अपनी यह जिम्मेदारी बखूबी निभाई हुई है।

बीजशब्द :

1. भूमंडलीकरण *- एक प्रक्रिया जो दुनिया के विभिन्न देशों,संस्थाओं,व्यापारी संघटनों को जोडकर इनके बीच आर्थिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक और तकनीकी संबंधो में समन्वय बढाने का प्रयास किया जाता है।*

*2.**निजीकरण** - निजी क्षेत्र द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग,व्यवसाय आदि पर पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से स्वामित्व प्राप्त करना तथा उनका प्रबंधन करना।*

*3.**उदारीकरण** - बाजार को मुक्त करना अर्थात सरकार द्वारा लगाये गये अनावश्यक नियंत्रण को काम करना।*

प्रस्तावना :

आदिकाल से आधुनिक काल तक की मानव की प्रगति पर प्रकाश डाला जाए तो यही प्राप्त होता है, कि मानव उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रेसर है। उसकी शांति और अशांति, उसकी अस्वस्थता, उसकी दौड़ उसे प्रतिफल एक आवाहन को स्वीकारने के लिए बाध्य करती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में भौतिक सुविधाएं हाथ जोड़कर दरवाजे

पर खड़ी है। भूमंडलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण इन बाजारी नीतियों के कारण प्रत्येक वस्तु और सेवा बिकाऊ बना चुकी है। "पैसा दो मेवा लो" का बोलबाला है। इस बाजारी दुनिया में मानव की प्रत्येक जरूर खरीदी और बेची जा रही है। अगर आपका छोटा बच्चा है,तो डे केयर उपलब्ध है, अगर आप मरिज हो अस्पताल और सेविका मौजूद है, अगर आप बूढ़े हो चुके हैं तो वृद्धाश्रम मौजूद है। पुराने जमाने में मानव की यह सभी ज़रूरतें पूरी हुआ करती थी। तब हमारी अपेक्षाएं कम और संतुष्टि अधिक थी। तब हम जिंदगी से तालमेल समायोजन करते थे। आज हम कंडीशन वाली जिंदगी जीते हैं। इसी बुनियादी जरूरत को बाजार ने परखकर उसे इन कैश कर लिया है। केवल एक क्लिक के सहारे प्रत्येक सुविधा अपने दरवाजे की घंटी बजाती है, और कार्ड के सहारे आपका व्यवहार पूरा हो जाता है। दुनिया के दूसरे छोर पर मौजूद वस्तु चंद मिनटो में आपके ड्राइंग रूम, बेडरूम में सज जाती है और इसका श्रेय जाता है इसी बाजारवाद को।यह बाजारवाद आज साहित्य का प्रमुख विषय बना है।

जहां इस बाजारवाद ने हमें बहुत ही सुविधाओं से संपन्न बना दिया वहां हमसे हमारी भावनाएं या तो छीन ली या फिर उसे कृत्रिम बना दिया। अब हम इस कृत्रिमता की शिकायत नहीं कर सकते क्योंकि हम सुविधा भोगी है। हमारी जरूरत और तसल्ली को हमने अपने परिमानों अपनी ऐनक से देखने की वृत्ति डाली है। अपनी सुविधाओं की खातिर व्यक्ति अपनों से ही दूर होता जा रहा है। उसकी सुविधा है कि उसे अपने मकान में एकांत नामक एक गहरी खामोशी मिले, लेकिन वह अपनों के हंसी मजाक, विचारों के आदान-प्रदान, बच्चों की किलकारी अपनत्व भाव इन सब से कोसों दूर होता जा रहा है। रिश्तो के बीच खत्म होते स्नेह के साथ अब पड़ोसियों के लिए चंद लम्हों का वक्त भी उसके पास नहीं है। आते-जाते रुक कर ही किसी की खैर खबर पूछी जाए, आज वह लम्हे भी उसे मयंसर सर नहीं। शहरीकरण के कारण उत्पन्न स्थिति का यथार्थ चित्रण करते हुए बी.एल. गौड कहते हैं-

"शहर में रहना और आदमी बने रहना एक बड़ी बात है।

अब शहर में आदमी कम बचे हैं,

वह पहचाना नहीं जाते.....

देखते ही मुस्कुराते हैं

हाथ हिलाते हैं और जल्दी से हाय कर चले जाते हैं।"**1**

इसी शहरीकरण के कारण आज मानव यंत्रवत बनता जा रहा है । उसके पास अब केवल यांत्रिकी व्यवहारिकता बची है,गहरी आत्मीयता नहीं । घर वालों, पड़ोसियों की दशा तो ऐसी ही है, लेकिन आज एक मां के पास अपने बच्चों को लोरी सुनाने तक का वक्त भी नहीं है। वैश्वीकरण के चलते बढ़ती महंगाई ने मां-बाप दोनों को घर चलाने के लिए दिन भर बाहर काम करने पर मजबूर किया है । मां-बाप की मुलाकात बच्चों से केवल रात में होती है, और इस समय यह दोनों सांसारिक उलझन को सुलझाने के तरीके ढूंढते रहते हैं । इस समय बच्चे

लैपटॉप, कंप्यूटर, मोबाइल से ही अपना काम चला लेते हैं। इसी संदर्भ में कृष्णा राय तुषार कहते हैं-

"लैपटॉप में जंगल देखी,शीशे के ताल में मछलियां है
चश्मे के नंबर में कैद पूत लेता है
वसंती भर कहाँ कहाँ चाँद की रातें खत्म हुई
लोक कथा परियों की बातें मोबाइल की कैद में पसलियां है।"**2**

मां का बच्चों को सुलाते समय लोरी गाना या कहानी सुनाना, यह भी बच्चे पर किए जाने वाले संस्कारों का ही एक हिस्सा है। जो आज मन की मसरूफियत की वजह से पीछे छूटा जा रही है। मां-बाप दोनों कमाऊ बन चुके हैं। कोई देसी कंपनी में काम करता है, तो कोई विदेशी। बच्चों के लिए उनके पास समय नहीं, इसलिए फिर बच्चे शीशे के ताल में मछली देखते हैं, लैपटॉप पर जंगल और मोबाइल में लोरी सुनते हैं,गेम खेलते हैं। बेशक हम इस युग को वैश्वीकरण का युग कहते हैं। भूमंडल का सुख-दुख, लाभ-हानि एक साथ खेल रहे हैं। मोबाइल और कंप्यूटर के इस युग ने मगर दो पिढीयों के बीच गहरी खाई बनाई है। बुजुर्ग व्यक्ति इन इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की अपेक्षा पारंपरिक साधनों को उपयोग में लाना चाहते हैं, तो नई पीढ़ी के लिए यह इलेक्ट्रॉनिक चीज हाथ का खिलौना बन बैठी है। आज का साठोत्तरी कवि इन सभी चीजों को देखकर उसे अपने काव्य में चित्रित करने का प्रयास करता है। साहित्यिक यह परिवर्तन काफी करीब से देख रहा है, और इसी परिवर्तन को लेकर साठोत्तरी कवि अशोक चंद्रा ने अपने काव्य में कहां है-

"किसी तरह लिख रही है अगली पीढ़ी को भीगा भाग पत्र
जिसका उत्तर अगर आया भी ई-मेल से आएगा
कापती हुई लाठी और मिचमिचाती आंखें
नहीं जानती संगणक की अजनबी इलेक्ट्रॉनिक भाषा
दो भाषाओं के बीच दो पिढीयों के बीच
दो समयों के बीच पीसकर रह जाएगा
बहुत-बहुत जरूरी संवाद।"**3**

भूमंडलीकरण के दौर में साहित्यिक उस पीढ़ी को लेकर चिंतित है, जिस पीढ़ी ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को अब तक पहचाना नहीं है। जो पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी के इस संघर्ष में परिवेश में रह रही है, इसका चित्रण बड़ी गंभीरता से आज का साहित्यिक करता है। भूमंडलीकरण के कारण दो पिढीयों के बीच बनी इस खाई को बड़े सटीक रूप से आज का साहित्यिक चित्रित करता हुआ नजर आता है। सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग का यह कटु यथार्थ साहित्य में हमेशा चित्रित हुआ है। पत्र भेजने पत्र की गंध को आत्मानुभूत करना अब यह पुरानी पीढ़ी के लिए मात्र स्वप्न बनकर रह गया है। अब बुजुर्ग भी युवाओं से तालमेल तभी रख सकते हैं, जब वह ई-मेल और एस एम एस की तकनीक को अवगत कर ले। यहां भावनाएं यंत्रवत बनती जा रही है। इस बात को अधोरेखित करने का काम आज का साहित्यिक करता है। हिंदी कवि ने बदलते मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर अपनी गहरी

कलम चलाई है। बाजारवाद ने आम आदमी की रग रग से वाकिफ होकर आज उसे पीने का पानी भी खरीद कर पीने पर मजबूर कर दिया है। इस बात को अपनी कविता द्वारा चित्रित करते हुए कमलेश्वर साहू कहते हैं-

"पानी को बेचने से पहले मछलियों से पूछा जाना
चाहिए था
मनुष्य से पूछना चाहिए था
नहीं तो पूछ लेना चाहिए था, पानी से
मगर पूछा गया देसी विदेशी पूंजीपतियों से
बिचौलियों से व्यापारियों से उद्योगपतियों से
उन्हीं के बीच हो गया पानी बेचने खरीदने का
कारोबार।"**4**

वैश्वीकरण की इस बाजार नीति का यह खुला चित्र आज का साहित्यिक हमारे सामने रखता है। यह धरती यह, प्रकृति हर व्यक्ति का हक और अधिकार है, लेकिन इसे चंद पूंजीपतियों ने, व्यापारियों ने खरीद लिया है, और इस खरीदारी को आज के साहित्यिक ने अपने कविता द्वारा वाणी देने का प्रयास किया है । बाजारीकरण के कारण पूंजीपति, व्यापारी सभी ने मिलकर अपना-अपना हिस्सा तय कर लिया है। इस व्यापार में उन्हें केवल मुनाफे की ही चिंता रही है। मुनाफाखोर और ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए आए दिन नित्य नई तरकीबे बना रहे हैं । आम आदमी उनकी जालसाजी में आराम से फसता दिखाई देता हुआ नजर आता है। पूंजीवादी व्यवस्था में इन ठेकेदारों का साथ निभाने वाला सर्व प्रमुख साधन मीडिया के रूप में सामने आता है। आजकल नित नए विज्ञापनों में अपना देह प्रदर्शन करती यूवतियों को केवल चंद रुपयो के बल पर यही उद्योगपति अपनी उंगलियों पर नचाते हैं, जिसका यथार्थ अंकन आज का साहित्यिक करता है। विज्ञापन सुंदरिया से इस कविता द्वारा मनोज कुमार झां ने आज विज्ञापन युग का सच काव्य द्वारा प्रस्तुत किया है।

निर्मित वस्तु ग्राहक तक पहुंचाने के लिए विज्ञापन करना अलग बात है, लेकिन आजकल के विज्ञापनों को देखने पर वैश्वीकरण के, बाजारवाद के ही दर्शन होते हैं । ज्यादा मुनाफा कमाने की प्रतियोगिता में विज्ञापन में अतिशयोक्तियों का भी सहारा लिया गया है। इसी अतिशयोक्ति का खुला प्रदर्शन करने के लिए अधनंगी युवतीयां कदमों को थिरकाती ग्राहक के मन-मस्तिष्क पर अपना गहरा असर छोड़ने में कामयाब होती है। सुंदर अवेस्टन में लिप्त यह चीज ग्राहक को जरूरत ना होने पर भी खरीदने खरीदने के लिए लालाईत करती है। स्त्री की शारीरिक सुंदरता से लाभान्वित होने की इच्छा से दुनिया के कुछ राष्ट्र मिलकर विश्व सुंदरी प्रतियोगिता का आयोजन करते हैं। स्त्री की शारीरिक सुंदरता का पर्दाफाश करते हुए कवियत्री प्रभा दीक्षित की आत्मा रुदन करते हुए कहती है-

"विश्व सुंदरी बोलो तुमने क्या खोया क्या पाया है
तन के बाजार में तुमने कितना कष्ट उठाया है
देह तुम्हारी विज्ञापन बनती है
किसी तिजारत की किन लोगों की खातिर तुमने
अपना रूप सजाया है चंद लुटेरों ने तुम पर भी थोड़ा
माल लुटाया है।"**5**

शारीरिक सुंदरता को केंद्र में रखकर और उसे ही माध्यम बनाते हुए विश्व के चंद राष्ट्र इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से कुछ और ही खिचड़ी पकाते हुए नजर आते हैं । यह इसी वैश्वीकरण के कारपोरेट जगत का नंगा सच है,जिसे साहित्यिक अपने साहित्य में चित्रित करता है । प्रतियोगिता का नाम ही इतना सुंदर रख दिया कि आम आदमी उस पर उंगली ना उठा सके । जिन स्त्रियों को क्षणिक सुख का यह संसार अपनी ओर आकर्षित करता है, वे स्त्रियां रुपए, पैसा, नाम, शोहरत, कामयाबी, रुतबा पाने की धुन में कुछ भी कर गुजरने को तैयार होती है । वह औरतें इसी चकाचौंध को दुनिया के लिए अपना घर-बार, रिश्ते-नाते, सब कुछ दावं पर लगा इसमें प्रवेश करती है । इस बदलती दुनिया को आज का साहित्यिक देखता है, और अपने साहित्य द्वारा उसे परिभाषित करने की कोशिश करता है।

बाजारीकरण का यह नया रूप आज साहित्य में लोगों के सामने नंगे सच की तरह दिखाई दे रहा है । साहित्यकार इस भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और निजीकरण की सभी समस्याओं को अपने साहित्य में वाणी देता हुआ उन्हें चित्रित करता दिखाई देता है । बाजारीकरण से उत्पन्न अनेक सामाजिक समस्याओं को साहित्य में चित्रित किया गया है, जो आने वाले समाज में परिवर्तन ला सकते हैं।

निष्कर्ष:

वैश्वीकरण, उदारीकरण, उदार नीति, विदेशी कंपनियों का आगमन, रोजगार के अवसरों का बढ़ जाना, सॉफ्टवेयर कंपनियां, कॉल सेंटर, मल्टीप्लेक्स, बिग बाजार आदि अनेक ऐसे नाम आज की दुनिया से जुडे हैं, जिससे बड़े से बड़े शहर से लेकर छोटे से छोटे गांव तक का व्यक्ति किसी न किसी रूप से प्रभावित हुआ है । रोजगार के शुभ अवसर जरूर बड़े हैं, लेकिन बारीकी से तपतीश करने पर यही सच हाथ लगेगा कि जिसके पास हुनर है, दुनिया हर कीमत पर उसे खरीदने के लिए तैयार है। आज विदेशियों में भारतीय इंजीनियरिंग, डॉक्टर, अध्यापकों की मांग इसी और निर्देश करती है । अगर आपके पास बौद्धिक सुंदरता है, हुनर है, आप दुनिया के बाजार में अपना वजूद कायम कर सकते हैं। जिनके पास इन दोनों का अभाव है, वह केवल घुन की तरह पीछे जा रहे हैं । वैश्वीकरण की इन्हीं नीतियों के कारण पूंजीपति, बिचौलिए, उद्योगपति और ज्यादा मालदार बन रहे हैं । हिंदी कवि ने वैश्वीकरण के कारण मानव जीवन पर हो रहे अनेक कारणो की बड़ी बारीकी से समीक्षा की है । मोबाइल,कंप्यूटर, इंटरनेट, प्रौद्योगिकी, जनसंचार माध्यम आदि हमारे जीवन के अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं । हमारे जीवन की यह त्रासदी है, कि इन सब का विचार केवल युवा वर्ग के लिए हो रहा है । इस प्रतियोगिता में हमारे बुजुर्ग एवं हमारे गांव हमसे पीछे छूट रहे हैं । सही अर्थों में अगर हमें प्रगति पथ पर अग्रेसर होना है तो उन्हे लेकर चलना ही होगा।

आज का साहित्यिक हमें यह संदेश देता है, कि इस बाजारवाद को नकारा नहीं जा सकता। अब हमारे पास केवल एक ही मार्ग बसता है कि दो पिढीयों में तालमेल बनाए रखना, बाजार वाद और आज की स्थिति में तालमेल बनाए रखना । शिकायत किए बगैर इस स्थिति से एक एकरूप होने में ही होशियारी है । हमें तालमेल रखते हुए यह जरूर ध्यान में रखना होगा कि इस बाजारवादी संस्कृति से किसी तरीके से हमारा सांस्कृतिक नुकसान ना हो। हमारी जरूरत भी पूरी हो, दुनिया के बाकी देशों की प्रतियोगिता में हमें अगर टिके रहना है तो यह तालमेल, न्याय जरूरी है। यह बात भी आज का साहित्यिक मानता है। आर्थिक संपन्नता के साथ-साथ सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए आज का साहित्यकार इन सभी समस्याओं से चिंतित है। बाजारवाद की स्थिति में साहित्यिक आज भी अपनी भूमिका सामने रख रहा है।

संदर्भ सूची :

1. बी.एल. गौड - वर्तमान साहित्य मई 2007 पृ. 59
2. डॉ. कृष्णा राय तुषार - मधुमती मार्च 2012 पृ. 88
3. अशोक चंद्रा - वर्तमान साहित्य मई 2007 पृ. 39
4. कमलेश्वर साहू - वर्तमान साहित्य जनवरी 2010 पृ.52
5. प्रभा दीक्षित - पहल जनवरी 2002 पृ.76